🌷<u>हिंदी पत्रकारिता</u>🌷

🌻डॉ प्रमोद कुमार ‘शिवम’🌻
हिंदी विभाग,
सरिया कॉलेज, सरिया, गिरिडीह (झारखण्ड)

परिभाषा :-

डॉ. अर्जुन तिवारी ने एनसाइक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटेनिका के आधार पर पत्रकारिता की व्याख्या इस प्रकार दी है -

"पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में 'जर्नलिज़्म' शब्द व्यवहृत होता है जो 'जर्नल' से निकला है। जिसका शाब्दिक अर्थ 'दैनिक' है। दिन-प्रतिदिन के क्रिया-कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में रहता था। 17 वीं एवं 18 वीं शती में पीरियाडिकल के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' और 'जर्नल' के प्रयोग हुए। 20 वीं सदी में गंभीर समालोचना एवं विद्वतापूर्ण प्रकाशन को इसके अंतर्गत माना गया। 'जर्नल' से बना 'जर्नालिज़्म' अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार-पत्रों एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अंतर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार से सम्बद्ध सभी साधन चाहे वे रेडियो हो या टेलिविजन इसीके अंतर्गत आते हैं।"[1]

" 'जर्नलिज़्म' फ्रेंच शब्द 'जर्नी' से व्युत्पन्न है जिसका तात्पर्य है प्रतिदिन के कार्यों अथवा घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करना । पत्रकारिता मोटे तौर पर प्रतिदिन की घटनाओं का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत करती है ।"[2]

"आक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार पत्रकार के व्यवसाय का प्रमुख साधन है : पत्रकारिता-लेखन और जन-सामान्य की स्थितियों का लेखन और संग्रह व 'जनरल्स' की सुरक्षा और संग्रहवृत्ति ।"[3]

अमेरिकन एनसाइक्लोपिडिया में पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है - जर्नलिज़्म फ्रेंच शब्द 'जर्नी' से व्युत्पन्न है जिसका अर्थ है एक-एक दिवस का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना । पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित समाचारों की संवाहिनी होती है । इसमें घटनाओं, तथ्यों, व्यवस्थापकता के साथ-साथ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संदर्भों की प्रस्तुति होती है । अत: कहा जा सकता है कि पत्रकारिता के अंतर्गत समाचारों का संकलन-प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं व्यावसायिक प्रबंध संगठन की दक्षता को प्रस्तुत करना ही कर्म है ।[4]

चेम्बर डिक्शनरी के अनुसार प्रकाशन, संपादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यवसाय ही पत्रकारिता है ।[5]

न्यू वेबस्टर्स डिक्शनरी के अनुसार पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला है । इसका कार्य जनता तथा जन-नेताओं के समक्ष लोक कल्याण संबंधी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है ।[1]

ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुँचाना ही पत्रकला है ।[2]

पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिस्थितिगत तथ्यों को अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के संदर्भ और आलोक में उपस्थित करती है ।[3]

डॉ. भंवर सुराणा की दृष्टि में पत्रकारिता वह धर्म है, जिसका संबंध पत्रकार के उस कर्म से है जिससे वह तात्कालिक घटनाओं और समस्याओं का सबसे अधिक सही और निष्पक्ष विवरण पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करें और जनमत जाग्रत करने का श्रम भी करें ।[7]

पत्रकारिता 'पाँचवा वेद' है जिसके द्वारा हम ज्ञान-विज्ञान संबंधी तथ्यों को जानकर अपने बंद मस्तिष्क को खोलते हैं ।[8]

समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं। गीता में जगह-जगह 'शुभदृष्टि' का प्रयोग है। यह शुभ दृष्टि ही पत्रकारिता है, जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्त्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। महात्मा गाँधी तो इसमें 'समदृष्टि' को महत्त्व देते हैं। समाज हित में सम्यक प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव और असुन्दर पर 'सत्यम्, शिवं, सुन्दरम्' की शंखध्वनि ही पत्रकारिता है।[4] विलियम्स के मतानुसार पत्रकारिता एक समसामयिक इतिहास है, जा शीघ्रतापूर्वक लिखा जाता है। अपने समय का लिखा गया इतिहास ही पत्रकारिता का संदर्भ है। दैनिक क्रम में घटनेवाली घटनाओं का चाहे यह घटना राजनैतिक हो, सांस्कृतिक हो और चाहे आर्थिक हो, रहस्योद्घाटन ही पत्रकारिता का जीवन है। पत्रकारिता का मूल ध्येय अन्याय का उद्घाटन करना, दोष-परिहार करना, सलाह देना, असहायों की सहायता करना और मित्रविहीन लोगों को मित्रवत मार्ग दिखाना है।[5] 'मोर्डन जर्नलिज्म' में कर्ल जी. मुगलर ने पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है कि पत्रकारिता तात्कालिक घटनाओं के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित ज्ञान का कार्य है। ऐसा कार्य जिसमें आवश्यक तथ्यों को प्राप्त करने, उनकी महत्ता के अनुसार ही उसे तैयार करना अर्थात् उत्पन्न स्थिति के अनुसार तात्कालिक घटनाओं की बुद्धिमता से जनजीवन के सम्मुख प्रस्तुत करना पडता है।[6]

पत्रकारिता वह विधा है जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने संबंध में लिखा जाये वही पत्रकारिता है।[1] ~कृष्ण बिहारी मिश्र

सी. जी. मूलर के कथनानुसार सामयिक ज्ञान का व्यवसाय ही पत्रकारिता है। इसमें तथ्यों की प्राप्ति उनका मूल्यांकन एवं ठीक-ठीक प्रस्तुतीकरण होता है।[2]

हर्बट बूकर के अनुसार पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं जिसे हम स्वत: कभी नहीं जान सकते।[3]

मैथ्यू आर्नल्ड के मतानुसार पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा जानेवाला साहित्य है।[4]

लेसी स्टेफेस के अनुसार जिन बातों की आपको जानकारी नहीं है, उनके बारे में अवगत कराना पत्रकारिता है।[5]

जेम्स मेकडोनल्ड के अनुसार - पत्रकारिता रण भूमि से भी अधिक श्रेष्ठ है, यह व्यवसाय नहीं व्यवसाय से श्रेष्ठ वस्तु है। यह एक जीवन है।[6]

डॉ. रामचंद्र तिवारी के कथनानुसार समग्र रूपेण पत्रकारिता व्यवसाय है और राष्ट्रीय लोकचेतना को उदीप्त करने का सशक्त माध्यम है ।[7]

श्याम सुन्दरदास ने पत्रकारिता को आधुनिकता की एक विशिष्ट उपलब्धि कहा है । पत्रकारिता का सामान्य अर्थ है “पत्रकार का काम या व्यवसाय ।[8]

रामचन्द्र वर्मा ने मानक हिन्दी कोश में पत्रकारिता को परिभाषित करते हुए उसे तीन रूपों में रखा है : (1) पत्रकार होने की अवस्था या भाव (2) पत्रकार का काम, तथा (3) वह विधा जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, उद्देश्यों आदि का विवेचन होता है ।[9]

[redacted]

डॉ. बद्रीनाथ कपूर ने वैज्ञानिक परिभाषा कोश में कहा है कि ‘पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन, आदेश आदि देने का कार्य है ।[1]

प्रायः पत्रकारिता (Jarnalism), माध्यम (Media), प्रेस (Press), जनमाध्यम (Mass media), जनसंचार (Mass Communication) को एक ही अर्थ में ग्रहण किया जाता है, पर सूक्ष्म दृष्टि से इन सभी शब्दों का अपना एक विशिष्ट अर्थ है ।

पत्रकारिता समाचारों के संकलन, चयन, विश्लेषण तथा सम्प्रेषण की प्रक्रिया है ।

माध्यम में संचार के साधन तथा पत्रकारिता की गतिविधियों को संचालित करनेवाले संगठन आते हैं ।

प्रेस तकनीकी रूप में समाचार को संकेतित करता है ।

जनमाध्यम का तात्पर्य सभी प्रकार के प्रकाशन, प्रसारण, कार्यक्रम, पुस्तक तथा फिल्म आदि प्रमुख साधनों से हैं ।

जनसंचार में जनमाध्यम के सभी साधनों के अतिरिक्त टेलीफोन, टेलिग्राफ, डाकसेवा इत्यादि सम्मिलित है ।

पत्रों के अतिरिक्त आकाशवाणी एवं दूरदर्शन भी अब पत्रकारिता के क्षेत्र में आ चुके हैं । अतः इसकी व्यापक परिभाषा होनी चाहिए ।

प्रकाशन, चित्रों द्वारा प्रस्तुतीकरण तथा प्रसारण हेतु सामयिक और सरस तथ्यों के संग्रह और सम्पादन को पत्रकारिता कहा जा सकता है।

समाचार पत्र के कर्म से संबंधित पत्रकार के नाम से जाने जाते हैं और पत्रकार का कर्म पत्रकारिता के रूप में। पत्रकारिता वस्तुतः बहुत समय पश्चात पत्रकार के कर्म के अर्थ में रूढ़ हो गया। यह शब्द पत्र-कार्य + इता से मिलकर बना है।

वास्तव में पत्रकारिता पत्रकार द्वारा चारों दिशाओं पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण की सूचनाएँ एकत्र करके उन्हें जनता के सामने रखने का माध्यम है। साथ ही जनता के विचारों के अनुसार ही अपनी विचारधारा को जनता के समक्ष प्रस्तुत करना है।[2]

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि दैनिक जीवन में घटनेवाली घटनाओं को शीघ्रता से जनता के समक्ष लाना ही पत्रकारिता है। यह एक ऐसा विविधपूर्ण कर्म है जिसके अंतर्गत जीवन की छोटी सी छोटी और बड़ी से बड़ी स्थितियों का समायोजन होता है। व्यक्ति, समाज, देश, राष्ट्र के सामाजिक संदर्भों और बहुविध परिवेश की कहानी ही पत्रकारिता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम के जन-जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है। यह वह विधा है जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों एवं लक्ष्यों को विवेचन होता है।

धन्यवाद